दृढ़ संकल्प सफलता की कुंजी

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

हम जो चिन्तन करते हैं उसके प्रति समर्पित हो जाना दृढ़ संकल्प है। ऊँचे लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दृढ़ संकल्प की आवश्यकता होती है। मनुष्य के पास विकसित तन, मन और दृढ़ इच्छा है। यदि मनुष्य का संकल्प दृढ़ रहे तो वह किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने में समर्थ हो जायेगा। कुण्डलिनी जागरण की प्रक्रिया से वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। श्वास प्रक्रिया के समुचित करने से शक्ति बढ़ती है। भूत वर्तमान और भविष्य को समझने और जानने की शक्ति मनुष्य के पास है। ब्रह्मचर्य पालन के माध्यम से शक्ति का संतुलन कर वह इच्छा शक्ति को दृढ़ करता है। दृढ़ संकल्प शक्ति से एकाग्रता बढ़ती है। एक जगह चित्त होने से आनन्द की प्राप्ति होती है। नकारात्मकता दूर हो जाती है। सद्विचारोंवाला, परोपकारी, मानव कल्याण के लिये कार्य करने वाला व्यक्ति समाज सेवा में अपने को लगा देता है। दृढ़ संकल्पवान आगे बढ़ता है। जितने भी उद्योगपति है वे दृढ़ संकल्प के धनी हैं। सूचना क्रान्ति लाने में उद्योगपतियों ने कड़ी मेहनत की है। भारत के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र भाई मोदी दृढ़ संकल्प के धनी है। वे जिस लक्ष्य को निर्धारित कर लेते हैं उसे प्राप्त करने के लिये जीजान से प्रयास करते हैं। उनके साथ 125 करोड़ देशवासियों की शक्ति कार्य करती है। अपने पड़ोसी देशों के साथ आंख से आंख मिला लेने की शक्ति उनकी दृढ़ इच्छा शक्ति का परिणाम है। दृढ़ संकल्प शक्ति के साथ कार्य करते हुए भारत को एक नयी ऊंचाई पर पहुंचा दिया है। दृढ़ संकल्प शक्ति के लिये कड़ी मेहनत, दूर दृष्टि और पक्का इरादा होना बहुत आवश्यक है।

कड़ी मेहनत का अर्थ है सही दिशा में पुरुषार्थ करना। मेहनत के साथ लक्ष्य स्पष्ट होना चाहिए। लक्ष्य स्पष्ट होने से उसकी प्राप्ति हो जाती है। जब लक्ष्य ही स्पष्ट नहीं रहेगा तो किया गया प्रयास लक्ष्य को प्राप्त नहीं करा सकता और किया गया परिश्रम व्यर्थ हो जाता है।

विद्यार्थी जीवन में ही मेहनत का अभ्यास शुरू कर देना चाहिये। विद्यार्थी जब विद्यालय में जाता है तभी से यह प्रक्रिया प्रारंभ हो जानी चाहिए। कक्षा दस तक आते–आते विद्यार्थी जागरूक हो जाता है। उसे आज्ञा क्या बनना है। उसी अनुसार विषयों का चयन करके परिश्रम प्रारंभ कर देना चाहिए। कक्षा बारह पास करते ही विद्यार्थी के सामने अनेक विकल्प खुले रहते है। इन विकल्पों का चुनाव बहुत सावधानी से करना चाहिये। विकल्पों के साथ–साथ अपनी शक्ति और सामर्थ्य का भी अंदाजा लगा लेना चाहिए। जीवन के रणक्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए बहुत कुछ है। यही से ही प्रशासनिक सेवाओं का विकल्प, चिकित्सकीय सेवाओं का विकल्प, आभियंत्रकीय, वाणिज्यिक और व्यापारिक तथा इसी प्रकार के अन्य सेवाओं के विकल्प खुले रहते है। विद्यार्थी को कौनसा विकल्प चुनना है यह उसके सामर्थ्य पर निर्भर करता है। कुछ क्षेत्र की सेवाओं का कार्य कम परिश्रम से भी प्राप्त हो सकता है, किन्तु कुछ सेवाएं ऐसी हैं जिनको प्राप्त करने के लिए करो या मरो के मार्ग पर चलना पड़ता है। तभी जीवन में सफलता प्राप्त हो सकती है और जीवन खुशहाल रह सकता है। विद्यार्थी जीवन में किया गया परिश्रम जीवन भर के लिए सुख और शांति का प्रदाता होता है। जिसने अपने विद्यार्थी जीवन को व्यर्थ के कार्यों में नष्ट कर दिया उसको जीवन भर दुःख भोगना पड़ता है और दूसरों के सहारे जीवन–यापन करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति समाज पर बोझ होकर जीवन–यापन करता है।

विद्यार्थी जीवन में ही ऐसा प्रयास करना चाहिए कि जीवन में सफलता प्राप्त हो और दूसरे लोगों को भी संबल दिया जा सके। द्रौपदी के स्वयंवर के समय अनेक राजे–महाराजे लक्ष्य को भेदने के लिए प्रयास किये थे, किन्तु उनका प्रयास सफल नहीं रहा। केवल अर्जुन ने अपने कड़े परिश्रम से लक्ष्य पर निशाना साध करके ऐसा शरसंधान किया कि उनको सफलता मिली। अर्जुन की तरह ही निश्चित लक्ष्य के ऊपर जो व्यक्ति शरंसधान करता है वही जीवन क्षेत्र में सफल हो पाता है। सदैव लक्ष्य ऊँचा बनाना चाहिए। ऊँचा लक्ष्य बनाने से सफलता कही न कही अवश्य मिल जाती है। संसार में जितने भी महापुरुष हुये है उनके जीवन का मूलमंत्र कड़ी मेहनत है। जन्म से कोई महान् नहीं होता, कड़े परिश्रम और मेहनत से ही कोई व्यक्ति महान् होता है। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का उदाहरण हम सबके सामने है।

एक गरीब परिवार से निकलकर के भारत जैसे देश का प्रधानमंत्री बन जाना उनके दृढ़ संकल्प शक्ति और कड़ी मेहनत का ही परिणाम है। एक मजदूर भी कड़ी मेहनत करता है। एक अधिकारी भी दिनभर परिश्रम करता है। लेकिन दोनों के जीवनयापन में महान् अंतर है। अधिकारी का जीवन बड़े ही आराम से और सुखमय ढ़ंग से व्यतीत होता है। किन्तु एक मजदूर दिनभर परिश्रम करने के बाद भी अपने पूरे परिवार का पालन पोषण सही ढ़ंग से नहीं कर पाता। इसका कारण क्या है ? इसका कारण स्पष्ट है। लक्ष्य के निर्धारण करने के समय दोनों में महान् अंतर रहा होगा। इसी का परिणाम है एक तो लक्ष्य प्राप्त करने में सफल हो गया और दूसरा लक्ष्य नहीं प्राप्त कर सका। कड़ी मेहनत करने वाले लोग मिट्टी को भी सोना बना देते हैं। आज दुनिया भर में हर एक सफल व्यक्ति कुछ न कुछ कष्ट सहने के बाद ही ऊँचाइयों पर पहुँच पाया है। सपना किसी चमत्कार से सच नहीं बनता, यह पसीना, दृढ़ संकल्प और कड़ी मेहनत से सत्य होता है। आत्मविश्वास और कड़ी मेहनत सफलता की ओर ले जाते हैं।